हिंदी की समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में चित्रित आत्मनिर्भर नारी

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठावाडा विश्वविद्यालय नांदेड (महाराष्ट्र)

की पीएच.डी. (हिंदी)

उपाधि के पंजीकरण हेतु प्रस्तुत शोध - प्रबंध की रूपरेखा

प्रस्तुतकर्ता

- शोधछात्र -

विश्वास निवृत्ती पाटील

आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज आष्टा

तहसील - वालवा, जिला - सांगली

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. अरूण कुमार भंडारे

श्री. संत गाडगे महाराज महाविद्यालय लोहा

जि. नांदेड

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठावाडा विश्वविद्यालय नांदेड

नवम्बर २०१६

हिंदी की समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में चित्रित आत्मनिर्भर नारी।

शोध – प्रबंध की रूपरेषा।

पृष्ठभूमी तथा विषय चयन :

बीसवी सदी के अंतिम चरण तथा इक्कीसवीं शती के पुर्वार्ध में हमारा समाज अनेक समस्याओं का शिकार बन चुका था। आज इस लोकतांत्रिक व्यवस्था और वैज्ञानिक विकास के बावजूद भी हम एक स्वस्थ एवं सुलभ जीवन जीने के लिए मोहताज बन गए है। विविध समस्याओं के साथ जूझते रहना हमारी आदत बन चुकी है। इस आदत को शिकार पुरूषों की तुलना में नारी अधिक है। विषय चयन के पिछे एक–दो महत्वपूर्ण कारण है, पहला है ' शिवाजी विश्वविद्यालय के युवा महोत्सव में वाद–विवाद इस प्रतियोगिता छात्रों के सामने सुंदर विषय रखा था। ' भारतीय नारी सबला की अबला' प्रतियोगिता में सहभागी छात्र–छात्राएं नारी के सबला और अबला होने पर विचार व्यक्त कर रहे थे। छात्रों के विचार सुनकर और वर्तमान स्थिती को देखकर मुझे ऐसो प्रतित हुआ कि, भारतीय नारी सबला है। प्रतियोगिता सुनते समय मेरे दिमाग में पी.टी.उषा, मेरी कॉम, सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा, प्रतिभाताई पाटील, सुषमा स्वराज्य, मायावती, सुनिता विल्यम्स, कल्पना चावला आदि छाई रही जो आज सबला है।

सबला का अर्थ है 'स्वावलंबन'। जिसे हम आत्मनिर्भर भी कहते है। उसी सप्ताह में मैंने 'कृष्णा अग्निहोत्री' का उपन्यास 'आना इस देश' पढा। उपन्यास की नायिका सुरैया ने मुझे काफी प्रभावित किया। सुरैया का पति परवेझ हमेशा सुरैया को सताता था। सुरैया के सौंदर्य पर खुद ही जलता है। सुरैया की मुॅंह पर ॲसिडे डलवाने की बाते करता हैं, ताने मारते रहता था। सुरैया पति परवेझ से तंग आकर इसे छोडकर अपने दादा–दादी के पास चली जाती है। वहॉ पर अथक परिश्रम और प्रयास से पुलिस विभाग में नौकरी प्राप्त करके आत्मनिर्भर बनती है। इसी आत्मनिर्भर नारी का चित्रण समकालीन साहित्य में हुआ है। नारी ही नारी का चित्रण पुरी सशक्तता और संवेदना के साथ करती है। उपन्यास साहित्य पढना ही मेरी रूचि है। अतः शोध निर्देशक डॉ. अरूण भंडारे के साथ बातचित करने के बाद, विषय तय किया गया' समकालीन हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासो में चित्रित आत्मनिर्भर नारी।

प्रस्तुत अनुसंधानात्मक विषय को लेकर मन में निम्नलिखित प्रश्न उभरे है।

1) वर्तमान समय में नारी आत्मनिर्भर क्यो बन गई है?
2) नारी किन–किन क्षेत्रों में काम करने लगी है?
3) आत्मनिर्भर नारी की समस्या?
4) आत्मनिर्भर नारी की पराधिन नारो से किस प्रकार भिन्न है?
5) आत्मनिर्भर नारी का पारिवारिक जीवन कैसा है?
6) आत्मनिर्भर नारी का दांपत्य जीवन कैसा है?
7) आत्मनिर्भर नारी कार्यक्षेत्रिय जीवन कैसा है?
8) दोहरी भुमिका का निर्वाह करते समय आनेवाली समस्याए?

अनुसंधान की सीमा एवं व्याप्ति :

प्रत्येक शोध प्रबंध की अपनी सीमा एवं व्याप्ति होती है। कोई भी शोध – प्रबंध सुचारू रूप से होने के लिए उसका सुनियोजन आवश्यक है। 'समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासो में चित्रित आत्मनिर्भर नारी।' अपनी सीमा एवं व्याप्ति के अंतर्गत ही प्रस्तुत होगा। प्रस्तुत शोध कार्य सात अध्यायों में विभाजित है।

अनुसंधान कार्य की योजना – अध्याय विभाजन

1. प्रथम अध्याय : नारी स्वरूप निर्धारण।
1.1 नारी की परिभाषा।
1.2 विभिन्न युगों में नारी की स्थिती।
1.3 साहित्य में नारी।
1.4 समाज सुधारकों के आंदोलन।
1.5 नारी जागरण।
निष्कर्ष।

2. द्वितीय अध्याय : आत्मनिर्भर नारी की परिभाषा और सामाजिक परिप्रेक्ष में मुल्यांकन।
2.1 आत्मनिर्भर नारी की परिभाषा।
2.2 आत्मनिर्भर नारी : बदलता समाज, बदलती नारी।
2.3 आत्मनिर्भरता के कारण।
2.4 आत्मनिर्भर नारी और परिवार।
2.5 आत्मनिर्भर नारी का कार्यक्षेत्रिय क्षायित्व।
निष्कर्ष।

3. तृतीय अध्याय : समकालीन लेखिकाओं कें उपन्यासों में चित्रित आत्मनिर्भर नारी।
3.1 नसिरा शर्मा
3.2 मृणाल पांडे
3.3 कुसुम अंसल
3.4 मृदुला गर्ग
3.5 प्रभा खेतान तथा अन्य लेखिकॉए।
निष्कर्ष।

4. चतुर्थ अध्याय : आत्मनिर्भर नारी : आत्मनिर्भर बनने के कारणों का विवेचन।
4.1 आर्थिक कारण
4.2 अर्थेतर कारण
निष्कर्ष।

5. पंचम अध्याय : आत्मनिर्भर नारी : विविध आयाम

5.1 आत्मनिर्भर नारी : वर्गीय आधारपर।

5.2 आत्मनिर्भर नारी : वैवाहिकता के आधारपर।

5.3 आत्मनिर्भर नारी : पारिवारिक आधारपर।

5.4 आत्मनिर्भर नारी : व्यावसायिकता के आधारपर।

निष्कर्ष।

6. षष्ठ अध्याय : आत्मनिर्भर नारी : पारिवारिक जीवन।

6.1 परिवार।

6.2 आत्मनिर्भर नारी : दांपत्य जीवन।

6.3 आत्मनिर्भर नारी और संतान।

6.4 आत्मनिर्भर नारी और माता – पिता।

6.5 आत्मनिर्भर नारी और सास – ससूर।

6.6 आत्मनिर्भर नारी और परिवार।

निष्कर्ष।

7. सप्तम अध्याय – आत्मनिर्भर नारी : कार्यक्षेत्रिय जीवन।

7.1 आत्मनिर्भर नारी का कार्यक्षेत्रिय पुरूषों के साथ संबंध।

7.2 आत्मनिर्भर नारी का कार्यक्षेत्रिय स्त्रियों के साथ संबंध।

7.3 आत्मनिर्भर नारी अधिकारी के रूप में।

निष्कर्ष।

उपसंहार –

अंत में उपसंहार प्रस्तुत किया जाएंगा। इसके साथ ही आधार ग्रंथ – सूची और संदर्भ ग्रंथ – सूची दी जाएंगी।

प्रस्तुत अनुसंधान का समाज के लिए उपयोग :

साहित्य और समाज एक ही सिक्के के दो पहलु है। साहित्य में समाज का वर्णन होता है। साहित्य ही समाज को सहि–गलत का ज्ञान कराता है। प्रस्तुत अनुसंधान का समाज के लिए निम्नलिखित उपयोग हो सकता है।

1) समकालीन लेखिकाओं का परिचय होगा।

2) समकालीन लेखिकाओं के कृतित्व से परिचय होगा।

3) उपन्यासों में चित्रित आत्मनिर्भर नारी से परिचय।

4) वर्तमान समय के आत्मनिर्भर नारी के अस्तित्व से परिचय।

5) समाज का नारी के तरफ देखने का बदला हुआ दृष्टिकोण से परिचय।

6) आत्मनिर्भर नारी से अन्य नारीयों को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिलेंगी।

7) स्त्री–पुरूष समानता की सिख होगी।

8) ज्ञान में वृध्दी होगी।

प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश

आज के आधुनिक युग में सबसे जादा प्रश्नचिन्ह आत्मनिर्भर नारी पर उठाए जाते है। समाज आत्मनिर्भर नारी की तरफ एक अलग से दृष्टीकोण से देखता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश होंगे।

1) आत्मनिर्भर नारी के तरफ पिछडे हुए समाज का देखने का नजरियां बदलना।
2) पराधिन नारी को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देना।
3) नारी के आत्मनिर्भर बनने के कारणों को स्पष्ट करना।
4) आत्मनिर्भर नारी का पारिवारीक रिश्तें और महत्व को स्पष्ट करना।
5) आत्मनिर्भर नारी के माध्यम से स्त्री–पुरूष समानता को स्पष्ट करना।
6) आधुनिक युग में आत्मनिर्भर नारी की आवश्यकता स्पष्ट करना।
7) आत्मनिर्भर नारी का आत्मविश्वास, स्वाभिमान आदि को स्पष्ट करना।

प्रस्तुत विषय से संबंधित शोधकार्य

1) रोहिणी अग्रवाल जी का 'हिंदी उपन्यासों में कामकाजी नारी'
2) सुलोचना देशपांडे जी का 'साठोत्तवी हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में कामकाजी नारी (19960–1990)
3) बालाजी श्रीपती भुरे' जी का। कृष्णा अग्निहोत्री की कहॉनियों में नारी,

कार्य विभाजन

प्रथम स्तर :– सामग्री संकलन करना। चयित विषय से संबंधित पुस्तके, ग्रंथो, नियमों, सरकारी अधिनियमों आदि का संकलन और सर्वेक्षण।

द्वितिय स्तर :– संकलित सामग्री पर टिप्पणींयां तैयार करना। प्राप्त टिप्पणींयों में सुत्रबध्दता लाते हुए निधारित विषय से संबंधित लेखन तथा टिप्पण तैयार करना।

तृतीय स्तर :– ग्रहित अध्यायों का सविस्तर लेखन करना। निरीक्षण, परीक्षण के पश्चात अध्याय लेखन को अंतिम रूप देना।

अनुसंधान का महत्व –

सदियों से भारतीय समाज व्यवस्था ने नारी को अनेक सामाजिक और नैतिक बंधनो के जंजिरो में जकडा था। उसे चुला–चौका तक सिमीत रखा गया। नारी को चारदिवारों के बाहर नहीं आने दिया। परंतु नब्बे के दशक में नारी में चेतना जागृत हुई। उसने शिक्षा प्राप्त कर पुरुष के कंधो से कंधा मिलाते हुए आज दुनिया के हर क्षेत्र में कार्यरत है। वह अब पुरूष के ऊपर अधिन न रहकर आत्मनिर्भर बनी है। इसी आत्मनिर्भर नारी का चित्रण समकालीन हिंदी लेखिकाओं ने किया है। आत्मनिर्भर नारी पर किसी भी विश्वविद्यालय में शोध कार्य नही हुआ है। यही इस विषय का महत्व है।

इस अनुसंधान माध्यम से नारी की संघर्ष की प्रवृत्ति, नौकरी तथा आर्थिक क्षमता, उसकी महत्वकांक्षा, आत्मविश्वास आदि बातों का सशक्तता के साथ चित्रण करना हो इस अनुसंधान का महत्व है।

अनुसंधान की प्रविधियॉ –

1) शास्त्रीय पध्दती   2) विवेचन पध्दती
3) व्याख्यात्मक पध्दती   4) ऐतिहासिक पध्दती
5) सामाजिक पध्दती

संदर्भ – ग्रंथ सूची

अ.नं.	ग्रंथ	लेखिका	प्रकाशन
1	औरत के लिए औरत	नसिरा शर्मा	2003
2	बात एक औरत की	कृष्णा अग्निहोत्री	
3	एक जमीन अपनी	चित्रा मुद्गल	1990
4	रंग – ढंग	मृदुला गर्ग	1995
5	अपनी गवाही	मृणाल पांडे	2002

शोध छात्र

श्री. विश्वास निवृत्ती पाटील
तलसिल – वालवा, जि. सांगली

शोध निर्देशक

डॉ. अरूण कुमार भंडारे
श्री. संत गाडगे महाराज महाविद्यालय लोहा
जि. नांदेड

Filename: Ph.D. Synopsis of Patil V
Directory: C:\Users\admin\Desktop
Template:
C:\Users\admin\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title: fganh dh ledkyhu ysf[kdkvksa ds miU;klksa esa fpf=r vkRefuHkZj ukjh
Subject:
Author: RIT
Keywords:
Comments:
Creation Date: 28-Nov-16 9:01:00 AM
Change Number: 2
Last Saved On: 28-Nov-16 9:01:00 AM
Last Saved By: admin
Total Editing Time: 0 Minutes
Last Printed On: 28-Nov-16 9:02:00 AM
As of Last Complete Printing
Number of Pages: 6
Number of Words: 1,220 (approx.)
Number of Characters: 6,956 (approx.)